

Question No.

Tabrej Alam

U.P.S.C
UNIQUE IAS
STUDY CIRCLE SINCE 1990

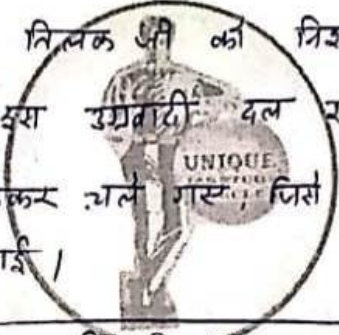
Q:- सूरत विभाजन क्या था? उदारवादी एवं उग्रवादीयों के बीच क्या विवादों थीं ?

Ans

सूरत विभाजन

सूरत विभाजन 1905 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में उदारवादी और उग्रवादी दलों के मध्य हुआ विभाजन था। 1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बनने के बाद यह पहली घटना थी जिसमें कांग्रेस में फूट पड़ी। इस विभाजन का मुख्य कारण था कि उदारवादी एवं उग्रवादी दलों के नेताओं की नीतियों का परस्पर विरोधी होना। जहाँ उदारवादी दल स्वराज की प्राप्ति पूर्ण संवैधानिक तरीके से चाहते थे वहीं उग्रवादी दल को स्वराज के लिए किसी भी हद तक जाया मंजूर था। अक्टूबर 1906 में कलकत्ता अधिवेशन में सर्वप्रथम स्वराज के लिए 4 प्रस्ताव पारित किए गए जिनमें - (a) स्वयं सरकार (b) बहिष्कार (c) राष्ट्रीय शिक्षा (d) स्वदेशी शामिल थे।

परन्तु जब 1907 में भारत में कांग्रेस अधिवेशन
 शराबिहारी घोष के नेतृत्व में सधिवेशन हुआ
 तब ये शारे प्रस्ताव मस्तीकार कर दिए
 गए तथा चारों प्रस्तावों को खारिज कर दिया
 गया। इस घटना से उग्रवादी दल नाराज थी।
 वहीं इस विभाजन को तब संजाम दिया गया
 जब भारत अधिवेशन में एक कोल्हापुरी चप्पल
 बाल गंगाधर तिलक जी को निशाना बनाकर
 फेंका गया। इस उग्रवादी दल के एक
 अधिवेशन छोड़कर चले गए, जिसे भारत विभाजन
 की संज्ञा दी गई।



उदारवादी एवं उग्रवादी के बीच मुख्य विद्वन्द्वे
BHOPAL

Established since 1990

उदारवादी जहाँ स्वराज की माँग
 संवैधानिक ढाँचे में रहकर कर रहे थे वहीं
 उग्रवादी दल स्वराज के लिए हिंसा पर भी
 इतार रहे। इसका एक उदाहरण 1908 में
 खुदीराम बोस और प्रफुल्लचाकी द्वारा किया
 गया अलीपुर बम कांड है। उदारवादियों की
 मुख्यतः मांगें थीं -

- i) विधान परिषदों का विस्तार एवं सुधार
- ii) ICS परीक्षा का आयोजन एवं उच्च पदों पर
 भारतीयों की नियुक्ति।

- 11) कार्यपालिका और न्यायपालिका को अलग करना।
- 12) स्थानीय निकायों के लिए अधिक शक्ति
- 13) सेना पर खर्च में कमी।
- 14) भाषण एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता।
- 15) संघ बनाये की स्वतंत्रता।

मूलतः उदारवादी सपनी मंगों को प्रस्तुत करने के लिए गानिकाओं, प्रस्तावों, बैठकों, पत्रक और पत्र, जापन और प्रतिनिधि-मंडल का उपयोग करते थे। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि उदारवादियों की सोच जहाँ भी कांग्रेस के शुरुआती विचारों से मेल खाती थी जिसमें वे कोई भी मांग हल समझकर नहीं बाधित करने की तरह मांगा करते थे।